सुन बावरे नेह कूड़ा लायो कुसुंभ रंगाना

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश मई 1970 में प्रकाशित सत्संग प्रवचन)

दुनिया में महापुरुष आते हैं, मानुष जन्म की बड़ाई को बयान करके लोगों को पेश करते हैं, कि इसकी Values of life (मानव जीवन का सही मूल्य) क्या है ? कौन-कौन सी चीज इसमें कीमती हैं। कौन सी ज्यादा कीमती है,कौन सी Secondary (गौण) है। अब सीप है। अब सीप अपनी जगह है, मोती अपनी जगह है। सीप की कीमत मोती से है। मोती न हो तो सीप का मोल क्या है ? इसी तरह इंसान की कीमत क्या है ? इसकी शान, इसकी कीमत आत्मा से है, जो इस शरीर को चला रही है। ये जिस्म (शरीर) है। जब इसके चलाने वाला इसमें से निकल जाता है, तो ये मिट्टी का ढेर है। मशीनरी वैसी ही है, As it is, intact. मगर चलाने वाला निकल गया। अब वह ऐसी मशीनरी है, जो चारों शाने चित्त पड़ी है। हर चीज वैसे ही मौजूद है, मगर चलाने वाला गायब है। वह अब (जीवित अवस्था में) इसमें है। उसको जानना है, और जिस आधार पर वह इस जिस्म में कायम (स्थित) है- वह निकल जाने वाला जो है - उसको जानना है। बस। ये है जिन्दगी का राज (रहस्य) जिसको हमने हल करना है। जिन्होंने हल किया, उन्होंने बड़ा खोल-खोल कर बताया है। जो उनसे मिले इसकी Demonstration (अनुभव) ले गये। कहने-सुनने की बातें कुछ और हैं, Feelings (भावनायें) कुछ और चीजें हैं, Inference (निष्कर्ष) निकालकर देखना कुछ और बात है, और Demonstration देना (साक्षात्कार करना) कुछ और है। इसलिये कहते हैं कि सन्तों की शहादत (गवाही) को सुनो -

सुन सन्तन की साची आखी,
सो बोलें जो पेखें आखी ।

न आलिमों (विद्वानों) की सुनो, न फाजिलों की सुनो, न ग्रन्थाकारों की सुनो । सन्तों

की शहादत को सुनो। वह सच्ची है, क्योंकि वह वही कुछ बयान करते हैं जो उन्होंने देखा है। और देखे बयान सब एक हैं, ''देखे का मत एक।'' जो कुछ महापुरुषों ने आज तक बयान किया वह हमारे हजरत इंसान का रोना है, जिसको अशरफ अलमखलूकात (सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ) कहा गया है, परमात्मा के बाद दूसरा दरजा इसका माना गया है ।

बाद अज़ खुदा बुजुर्ग तुई किस्सा मुख्तसर ।

(अर्थात् परमात्मा के बाद दूसरा दरजा इंसान का है) । तो महापुरुषों ने इस राजे-जिन्दगी (जीवन रहस्य) को, चलाने वाले को जाना, जिस आधार पर वह (जिस्म को चलाने वाला,आत्मा) इस जिस्म में कायम है, उसको जाना। जो उनको मिले उनको इसकी Demonstration (साक्षात अनुभव) मिला । ग्रन्थों-पोथियों में इस बात का जिक्र करते हैं कि चलाने वाले का अनुभव क्या हो सकता है? अगर उन References (प्रमाण जो ग्रंथों में मिलते हैं) को जानना हो तो जो बातें बाइबल में दी गई हैं उनका जवाब पूछना है तो बाइबल से पूछो। गुरु ग्रन्थ साहब में जो बातें बयान की हैं, उनका जवाब गुरु ग्रन्थ साहब में जो बातें बयान की हैं उनका जवाब गुरु ग्रंथ साहब से पूछो। तब तो सही माने समझ आयेंगे। अगर Intellectual level पर (बुद्धि के आधार पर) समझोगे, कोई कुछ कहेगा कोई कुछ कहेगा।

अभी जिक्र आ रहा था 'सुनिये' की पौढ़ी का, जपजी साहब का। लोग घिढ़कते मर जाते हैं, पाठ होता रहता है (मरने वाले के सिरहाने)। कुछ समझ नहीं आता वह कौन-सा सुनना है भई ? उस सुनने की तारीफ मैंने अभी अर्ज किया, अगर पूछना हो तो गुरु ग्रन्थ साहब से पूछो कि महाराज बताओ। और उसमें बताया है। यही पौड़ियाँ है चार, जो ''सुनिये'' की, वहां इस को थोड़ा वाजेह (स्पष्ट) करके लिखा गया है। वहां दिया है, ''नाओ सुनिये।'' नाओं सुनिये कहा है। बाहर का सुनना नहीं है। बाहर के सुनने से होश आती है। जो देखकर बयान करते हैं, उनके बयान में बड़ी Clarity (सफाई) है। जो सुन कर, पढ़ कर, बयान करना है, वह कुछ और बात है। तो सुनना कौन-सा है ? सुनने के लिये तारीफ की है, ''नाओं सुनिये।'' यही चार पौड़ियां गुरु ग्रन्थ साहब में बाकायदा Repeat (दुहराई) की गई हैं। तो नाओं किसको कहते हैं ? इसकी तारीफ महापुरुषों ने की है, गुरु ग्रंथ साहब ने की है -

नानक नाव के सब किछ वस है,
पूरे भाग को पाय ।

नाम जो है, Controlling Power (नियन्ता) है। सब इसके कण्ट्रोल में है । वह हमारी आत्मा को भी इस जिस्म में कायम रख रही है। सारे खण्डों-ब्रह्माण्डों को कितने संयम से चला रही है, किसी से टकराते नहीं। उसको नाम कहते हैं। वह परमात्मा अनाम है। जब इजहार में आया (व्यक्त हुआ) है, उसको नाम कहते हैं। ''नामे ही ते सब जग होवा।'' वह कण्ट्रोलिंग पावर है। अब इस सुनने की क्या है? उस करन-कारण-व्यक्त प्रभु-सत्ता में Phases (पहलू) तारीफ हैं- दो । बात समझने वाली है। जब परमात्मा ने चाहा ' मैं एक से अनेक हो जाऊं ' Vibration हुई, हिलोर हुई। हिलोर में दो चीजें बनी, एक Light (रोशनी) एक Sound (ध्वनि)। दोनों एक ही चीज हैं, Vibration का दूसरा नाम है। तो Sound principal कहो, नाद कहो, Music of spheres (मण्डलों का राग) कहो, उसका एक पहलू है। उसको सुनने से - ''सुन सुन पाइये गण्ड''- उसको सुनने से प्रभु के साथ हमारी गांठ बंध जाती है। परमात्मा जब इजहार में आया (व्यक्त हुआ) उसके दो Phases बने, एक Light (रोशनी) एक Sound (आवाज) । Sound के सुनने से गांठ बंध जाती है। किससे ? जहां से Sound आती है। उस सुनने की तारीफ गुरु ग्रन्थ साहब में आती है -

अफरियो जम मारिया न जाई ।
गुर के शब्दे नेड़ न आई।

शब्द और नाम एक ही मानों में बरता है। शब्द किसको कहते हैं ?

उत्पत परलै सबदे होवे, सबदे ही फिर ओपत होवे ।

अर्थात् उत्पत्ति और प्रलय जिस ताकत के आधार पर होती है और दोबारा सृष्टि का आगाज (शुरुआत) होता है, उसको शब्द कहते हैं। तो कहते हैं, ''अफरियो जम मारिया न जाई, गुर के सबदे नेड़ न आई।'' वह शब्द गुरु के द्वारा मिलता है। आगे कहते हैं, ''नाओं सुने तां दूरों भागे।'' ध्वनि को सुनकर यमराज भाग जाता है । ''सुनिये पोह न सके काल।'' वाणी को सुनो। कहते हैं मौत उस पर असर नहीं करती। वह Conscious entity है, चेतन लहर (धारा) है एक। हमारी आत्मा उसकी जात है (सहजाती है) । जब

वह (आत्मा) उससे मिलती है तो Negative Power (काल सत्ता) क्या करेगी ? जिस्म-जिस्मानियत (शरीर व शारीरिक व्यापार) से वह Unaffected (अप्रभावित) है। तो सुनिये की महिमा, मैं वही अर्ज़ करता हूं, किसी वाणी को समझना हो, गुरु का लफ़्ज है जैसे, तो वाणी से पूछो, नाम का लफ़ज है, वाणी से पूछो। Word का पूछना है तो बाइबल से पूछो। उसमें कहा है-

Thy Word is lamp unto my feet

अर्थात् तेरा शब्द मेरे मार्ग की रोशनी है, मार्ग दर्शक है मेरे लिये। मैं जब West (पश्चिम) में गया तो मैंने उनसे कहा, Look to your scriptures what you want to know. अपने धर्मग्रन्थों को खोजो। उनमें जवाब है हरेक सवाल का। मगर किसको पता है ? जो जानता है इस Science को । बाकी को It is truth handed down from posterity to posterity like a covered treasure (यह सत्य आने वाली पीढ़ियों को बन्द खजाने की तरह मिलता रहा, न खोलकर देखा न पता लगा)। तो नाम के सुनने से यमराज नजदीक नहीं आता। बाहर का सुनना पहला कदम है। महापुरुषों की बाणी सुन रहे हो। होश आती है। मगर जब तक इसकी Demonstration (साक्षात्कार) न हो, काम नहीं बनता। हमने मानुष जन्म पाया है, इसी में हम उसको अनुभव कर सकते हैं। जिन्होंने अनुभव किया उनकी सोहबत (संगति) में बैठो। उनसे Demonstration (साक्षात अनुभव) मिलेगा, हरेक चीज स्पष्ट हो जाएगी। जब तक Demonstration (साक्षात्कार) नहीं मिलेगा, मामला Clear (साफ) नहीं होगा।

तो अब सवाल हमारे सामने क्या है ? मानुष जन्म मिला है। रोज देखते हैं, लोग मरते हैं, कोई पैदा होते हैं, कोई छोटी उमर में मर जाता है, कोई जवानी में मर जाता है, कोई बुढ़ापे में मर जाता है। कोई घिड़क घिड़क कर मरता है, कोई हंसता हुआ जाता है। ये (मानुष जन्म) आखिर है क्या ? क्या Possibilities (संभावनायें) हैं इसको। लोग कहते हैं, पैदा हुए थे, दुनिया हंस रही थी, आने वाला रो रहा था। भई ऐसा जियो कि तुम जाओ हंसते और दुनिया तुमको रोये। तब तो हुई बात मानुष जन्म की बाज़ी जीत गया। मानुष जन्म तुमको मिल गया। अगर इस जन्म में तुम उसके Contact में (सम्पर्क में) आ गये, घर की राह ली। अब मानुष जन्म पाने के दो Phases (पहलू) हैं। एक तो Karmic

evolution प्रारब्ध कर्मो के अनुसार लेना-देना जो है, उसे खुशी से निभाओ। नये बीज (कर्म के) न डालो। घर की राह लो। और घर की राह लेने से- ''सुन सुन पाइये गण्ड'' - उसमें ध्वनि भी है, ज्योति भी।

''अन्तर ज्योति निरन्तर वाणी साचे साहिब स्यों लिव लाय।'' यह है राज़े-जिन्दगी (जीवन का रहस्य) । किसी समाज में रहो, Basic (मूलभूत) तालीम एक है। जो जो महापुरुष किसी समाज में हैं, उनकी Teachings (शिक्षाओं) को देखो। वह इस बात का Reference (प्रमाण) देते हैं। मगर आमिल (अनुभवी) लोगों की कमी होने के कारण यह चीजें At home (हृदयंगम) नहीं होती। कोई महापुरुष जो आया, उसने कोई नई चीज नहीं पेश की। क्योंकि Truth is one (सत्य एक है)। वह (महापुरुष) कई तरीकों से समझाने की करता है, मगर Clarity (स्पष्टीकरण) नहीं होती जब तक अनुभव न मिले।

जब लग न देखूं अपनी नैनी,
तब लग न पतीजूं गुर की बैनी।

बात समझे हो ? अब महापुरुषों से पूछिये कि दुनिया क्या कर रही है ? हम किस रंग में जा रहे हैं ? इसका इलाज क्या है ? सब महापुरुषों की एक ही तालीम रही है। Rise above isms (मतों और वादों से ऊपर उठो)। ''महापुरुष साखी बोलदे सांझी सकल जहाने।'' महापुरुष शिक्षा देते हैं सबको एक जैसी, As a man, मानवता के नाते। समाजों में, जिसमें वह आये, जीवन रहस्य को हल किया, उस वक्त की जबांदानी (प्रचलित भाषा) में पेश कर गये। जो उनसे मिले उनको Demonstration (व्यक्तिगत अनुभव) दे गये। चीजें वही हैं, सिर्फ Demonstration की (साक्षात्कार करने की) जरूरत है। उसको पाना है। वह कहां है ? वह इस शरीर रूपी मन्दिर में बसता है।

एका संगत इकत गृह बसते,
मिल बात न करते भाई।

एक ही संगत में दो भाई रह रहे हैं, आत्मा और परमात्मा, मगर अफसोस आपस में बात नहीं करते। क्यों नहीं करते ? जिसने बात करनी है, वह बाहर भटक रहा है। अगर वह बाहर से हट जाए, अपने आपको जान ले, तो देखे वह (प्रभु) भी इसी में है। ''इह शरीर हरि मन्दिर है जिसमें सच्चे की ज्योति।'' कहते हैं, जिसको तू ढूंढना चाहता है, वह तेरे अन्तर

में है और तू दर-बदर फिर रहा है। ग्रन्थों-पोथियों में इन्हीं बातों का जिक्र है, मगर जब तक Demonstration न हो, Clarity (बात साफ) नहीं होती। तो ऐसे महापुरुष की क्या निशानी है ?

भाई रे कोई सत्गुरु सन्त कहावे,
नैनों अलख लखावे।

कोई भी जो अपने को सन्त और सत्गुरु कहलवाता है, वह आँख बनाये जो इन्द्रियों के Level से ऊपर है। वहां से क, ख शुरू होगी। That is not the end - all (ये मन्जिल नहीं है)। अपने आपको जानने के लिये Self-analysis करके (अर्थात् जड़-चेतन की ग्रन्थी खोलकर) इन्द्रियों के घाट से ऊपर उठकर, नीचे चक्रों को तय करके - चाहे प्राणायाम करे, कुंभक करके ऊपर आकर अपने आपको जाने- फिर आगे क, ख, शुरू होगी। "Where the world's philosophies end there the religion starts." अर्थात् जहाँ दुनिया के सारे दर्शन खत्म हो जाते हैं वहां से क, ख, शुरू होती है परमार्थ की। और ये तो शुरूआत है। अपने आप को By self-analysis अर्थात् जड़-चेतन की ग्रन्थी खोलकर अपने आपको जानने के लिये सैकड़ों बरस योगियों ने लगायें। इसमें नेचुरल कोर्स (कुदरती रास्ता) कौन-सा है ? जिस्म को मजबूत करने के लिये हठयोग है, आयु को बढ़ाने के लिये प्राण योग है। उसको जानने के लिये Hypothesis (कल्पित आधार) बनाना- यह भक्ति योग है। और ज्ञान योग है, To draw inferences (बुद्धि विचार के आधार पर निष्कर्ष निकालना)। यह Intellectual giants का, बुद्धि के पहलवानों का काम है। Average साधारण आदमी क्या करे ? बच्चा, बूढ़ा, जवान क्या करें ? तो सन्तों ने ''सुरति-शब्द योग'' पेश किया। पेश ही नहीं किया, इसकी Demonstration (व्यक्तिगत अनुभव) वह पहले दिन दे देते हैं ।

वह (सन्त) कहते हैं, योगीजन नीचे 6 चक्रों को तय करके जब आज्ञा चक्र तक आता है, फिर अनहद शब्द को पकड़ कर सहस्रार में लीन होता है। पहले 6 चक्रों को तय करो, फिर उसको (अनहद शब्द को) पकड़ो। 6 चक्रों को तय करने के लिये कई मुसीबतें करनी पड़ती हैं। सैकड़ों बरस लोग लगे रहे । वह (सन्त सत्गुरु) पहले ही दिन तुमको पूंजी दे देंगे। कितना भारी Concession (रियायत) है। ये किसकी मेहरबानी है ? गुरु नानक और कबीर साहब की, To meet with the times, (जमाने के हालात को देखते हुए)। आयु

नहीं रही आज, Hereditarily we are not fit (पैदायश के लिहाज से हम उन कठिन साधनों को करने योग्य नहीं रहे)। तो सन्त पहले अनुभव देकर, पूंजी देकर कहते हैं, अच्छा भई चलो। साथ मदद भी करते हैं जहाँ-तहाँ। जो मरकर भी साथ दे और मरने के बाद भी Guide (मार्गदर्शन) करे। जाओ ढूंढो कहां मिलता है ? आखिर जो सन्तों की तारीफ़ की है, मैं अर्ज़ कर रहा हूँ, किसी बात के सही माने जानने के लिये धर्मग्रन्थों को खोजो। तो सन्तों की तारीफ़ की है गुरुबाणी में -

नानक कचड़ियाँ संग तोड़,
ढूंढ सज्जन सन्त पक्कियां ।

एह जीवंदे विछड़े ओ मोयां न जाई संग छोड़ ।

इसके क्या माने हैं ? कोई विरले ऐसे पुरुष मिलेंगे। जहां भी है, चलो भई, तुम्हारे साथ हैं। चलो आगे। आँखे मीचो, बाहर से हटो, तब तो है न सवाद। साथ जाने बाले को सवाद आ गया, मेरा एक साथी है जो मरकर भी नहीं छोड़ता, जीतेजी भी साथ है। समझे ? यह गुरुबाणी ही नहीं कहती, सारे महापुरुषों ने यह बात कही है -

दामने ऊ गीर ऐ यारे दिलेर,
को मुनज़्ज़ा बाशाद अज़ बाला ओ जेर।

अर्थात् ऐ बहादुर पुरुष किसी ऐसे के दामन को पकड़ जो (लोक-परलोक) दोनों से वाकिफ़ है। दुनिया जवाब दे जाए, वह (शिष्य) कहता है, वह मेरे साथ है। गुरु किसको कहते हैं ? जिसमें वह परमात्मा प्रकट है, उस Human pole (मानव प्रकाश स्तंभ) को कहते हैं। ''गुरु में आप समोए शब्द वरताया।'' गुरु में वह प्रभु प्रगट है, जो आप ही जीवों को अपने साथ जोड़ता चला जाता है। वह Word made flesh (शब्द-सदेह) है। तो राज़े-जिन्दगी अर्थात् जीवन रहस्य को हल करने के लिये उनकी सोहबत की जरूरत है जिन्होंने उसको हल किया है। वह इसकी Demonstration (अनुभव) देगा। करेगा, हो जायगा। मरकर होगा या नहीं, क्या सबूत है ? सन्तों का सौदा नगद है, जो उधार पर रहना चाहें उनको उधार मुबारक A bird in hand is better than two in the bush, जो जीते-जी पण्डित है, मरकर भी पण्डित है। जो जीते-जी अनपढ़ है, मरकर भी अनपढ़ है। बात समझे ? अब हम किस हालत में जा रहे हैं ? महापुरुष जागते पुरुष हैं। वह क्या कहते

हैं ? होश से सुनो। थोड़ी देर के लिये भूल जाओ दुनिया को । हमारा ही रोना रोयेंगे और खोल-खोलकर समझायेंगे। कान है तो सुनो। आँख है तो देखो। नहीं तो वक्त ज़ाया न करो।

राग सूही महला पांचवां

सुन बावरे तू काहे देख भुलाना
सुन बावरे नेह कूड़ा लायो कुसुंभ रंगाना ।

आपको पता है क्या Address (सम्बोधन) करते हैं ? बावरा। जिसकी अकल बदली गयी हो, होश ठिकाने न हों। सही को गलत देख रहा हो, गलत को सही देख रहा हो। Right understanding (सही-नजरी) क्या है ? यह जिस्म चन्द-रोजा है। Dust thou art and unto dust returnest (मिट्टी से तू उपजा और मिट्टी में मिल जायगा) इस (शरीर) पर जो लेबल लगाये हैं, इसके साथ चले जायेंगे। जिस्म की शोभा हमसे (आत्मा से) है। यह आखिर छोड़ना पड़ेगा। सबने छोड़ा।

राणा राव न को रहे रंक न तंग फकीर।
वारी आपो आपनी कोऊ न बांधे धीर।

जो आए, सब गए। बड़े-बड़े वली अवतार भी आए, महापुरुष भी आए। शरीर लिया और छोड़ गए। और कहते हैं, भाइयो ! सबको जाना पड़ेगा, बारी आने पर। Pack up, be ready. तैयार रहो। ''जैसे रैन पराहुणे उठ चलसी प्रभात।'' कब तक बैठे रहोगे ? पहली बात। Dust thou art and unto dust returnest. जिस पर तू इतना मान कर रहा है, यह जिस्म मिट्टी में मिला दिया जाएगा। Where you are कहाँ खड़े हो ? जो कुछ तुम देख रहे हो, इसको क्या कहते हैं ? कुसुंभ का रंग होता है, चन्द रोज रहता है, फिर उड़ जाता है। जो देख रहे हैं, जो सुन रहे हैं, जो Feel (महसूस) कर रहे हैं -Everything is changing. जिस्म बदल रहा है, संसार के सारे सिलसिले बदल रहे हैं -Panorama of life है, कोई At rest (एक रस) नहीं। हम इस भूल में पड़े हैं, जिस्म का रूप बन गये हैं। जिससे यह मशीनरी चल रही है, उसको नहीं जाना। हम इस मशीन के चलाने वाले हैं। जिस्म का जर्रा-जर्रा (कण-कण) बदल रहा है, जगत् के जर्रे बदल रहे हैं। जब दो चीजें एक ही रफ़्तार (गति) से बदल रही हों तो यही मालूम होता है, खड़ी हैं। इसको कहते हैं माया, इसको कहते हैं भूल। यह कहां से शुरू होती है ?

इह शरीर मूल है माया ।

हम देहधारी हैं, देह का रूप बन रहे हैं, देह के Level (दृष्टि) से देख रहे हैं। सारा जगत बदल रहा है। यह (जिस्म) भी बदल रहा है। मगर मालूम होता है ? किसी को मौत याद है? मरना है अवश्य। क्यों नहीं याद ? इसका कारण है कि जो आत्मा है वह अजर है, अमर है। वह कभी नहीं मरता। वह All-wisdom है, अले-कुक्ल (सर्वज्ञ) है। वह आनन्दमय है। अब हम रोज देखते हैं (लोगों को मरते) जिस्म अपने कंधों पर उठाये हैं, श्मशान भूमि में पहुँचाये हैं, हाथों से दाग दिये हैं, लेकिन यक़ीन तो नहीं आता हमने भी मरना है। क्यों ? आत्मा की झलक इसमें मौजूद है, All wisdom की। बेवकूफ़ से बेवकूफ़ आदमी को पूछो, वह कहता है, मेरे जैसा अकलमन्द कोई नहीं। क्यों साहब ? कोई कहता है मैं किसी से कम अकलमन्द हूँ ? हरेक जानता है मेरे जैसी अकल कोई नहीं रखता। वह झलक है ना ! मगर यह जिस्म का रूप बन गया। जिस्म का रूप बनने से भूल में पड़ गया। ''इह शरीर मूल है माया ।'' अब जब तक जिस्म-जिस्मानियत (शरीर व शारीरिक व्यापार) से ऊपर न आए भूल से कैसे निकले ? बाहर कर्मो के Reaction से, प्रारब्ध कर्मों के अनुसार दुख-सुख एक के बाद एक आते हैं - They follow each other.

दुख सुख दोवें कपड़े पहरे जाए मनुख ।

बड़े साफ लफज हैं। तो Changing Panorama (परिवर्तनशील संसार) होने से, कुछ Reaction हैं कर्मों के, कुछ यहां बन रहे हैं, भूल में फंस गये, फिर जिस्म का रूप बन गये। यकायक Drop scene (पटाक्षेप) होता है जीवन का। यह जिस्म छोड़ना है। इसको छोड़ना सीख जाए, जिस पर योगियों ने सैंकड़ों बरस लगाये हैं, अगर किसी महापुरुष की कृपा से थोड़ी Demonstration (अनुभव) मिल जाए, और रोज-रोज ''गुरमुख आवे जाए निसंग,'' तो आगे मन्जिल शुरू होती है। This is not the end-all (यहां खत्म नहीं होता) Where the world's philosophies end there the religion starts. (जहां दुनियाँ भर के फलसफे, दर्शन, खत्म हो जाते हैं, वहां से परमार्थ की क, ख, शुरू होती है) ।

तो कहते हैं, ए बावरे इंसान ! और क्या कहें ? तू क्यों देख कर भूल रहा है। Everything is changing, no permanence. हर चीज बदल रही है। यह कुसुंभ का रंग है,

उतर जाएगा। क्यों भूल में जा रहा है ? यह किसको Address (सम्बोधन) किया है ? To all mankind सब मनुष्य जाति को। कौन कह रहा है ? जो किनारे खड़ा है। किनको कह रहा है ? जिनके लिये उसका प्यार है । ऐ बच्चों ! होश में आओ। कितने दर्द भरे लफज हैं! प्यार भरे लफज़ हैं, जीवों को समझाने के लिये। आखिर ये अंश उसी के हैं, जो God in man है। तो परमात्मा को दर्द है सबका। सब उसके बच्चे हैं। वह क्यों भूल में जायें ? कितना दर्द है इस वाणी में, कितनी मोहब्बत है !

सुन बावरे तू काहे देख भुलाना ।
सुन बावरे नेह कूड़ा लायो कुसुंभ रंगाना ।

परमात्मा प्रेम है। आत्मा उस जाते-हक (परमात्मा की अंश है) ये भी प्रेम का स्वरूप है। इसका खासा (स्वभाव, प्रकृति) है, कहीं न कहीं लग कर रहना। ''अलमोमिन लाबुदी मिन उल महबूब'' - (कुरान शरीफ) - अर्थात् मोमिन के लिये आवश्यक है उसका कोई प्रीतम हो। आत्मा का प्रीतम बनना था उस प्रभु परमात्मा ने, बना बैठा दुनिया को। ये Changing panorama है (बदलता दृश्य है) एक रस नहीं रहता। कभी जुड़े तो सुखी, उखड़े तो दुखी हो गये। जो हमेशा के सुख को चाहे उसको प्रीतम बनाना चाहिये। कौन ? जो कभी न मरे। ''न ओह मरे न होवे सोग।'' इसीलिये कहा -

जो सुख को चाहे सदा शरण राम की ले ।

बाकी लेना-देना है, कोई स्त्री, कोई पुरुष कोई लड़का, कोई लड़की, कोई भाई, कोई बहिन। जिसका लेना-देना है, खुशी से दो। नये बीज न डालो। चलो, घर की राह लो। महापुरुष कहते हैं, बच्चा, क्यों भूल में जा रहा है, क्यों बावरा हुआ है, क्यों भटक रहा है ? जहां प्रेम लगाना था वहां न लगाया। लगा बैठा दुनिया से। इसलिये बार-बार दुनिया में आ रहा है हम कभी प्रभु की गोद में थे। जब से आए अभी तक वापस नहीं गये। अगर उसकी Demonstration (अनुभव) मिल जाए, आत्मा उसके साथ लग जाए, ''सुन सुन पाइये गण्ड।'' फिर ? उसका प्यार बन जाएगा, तो उसमें ज्यादा सुख है। ''जो सुख को चाहे सदा शरण राम की ले।'' वह महारस है।

बिखे बन फीका त्यागरी सखिये नाम महारस पियो ।

बाहर चीजों में हमें रस मालूम होता है, वह उन चीजों में रस नहीं, हमारे अन्तर में है। हम

आनन्दमय हैं। जितनी देर जुड़े रहते हैं आनन्द मालूम होता है, जब हटता है फिर दुखी होता है। मिसाल के तौर पर हम तमाशा देख रहे हैं, बड़े महव (तन्मय) होकर। एक आदमी के घर से खबर आती है, तुम्हारे घर में आग लग गई। बाकी लोग तमाशा देखें वह बेचारा भटके। भागता है। तमाशा वैसे ही हो रहा है, उसमें कोई Change नहीं। उसका देखने वाला जो है, वह टूट गया। ''सुख दुख दोनों कपड़े पहरे जाए मनुख।'' सुख दुख जो हैं, They follow each other. कारण ? कर्मों के अनुसार, जैसे Small cause court (छोटी अदालत) या Privy council (उच्चतम न्यायालय) होती है, ऐसे ही कुछ यहां के कर्म भी Reaction ले आते हैं। आखिर क्या कहते हैं ?

कूड़-कूड़े नेह लग्गा विसरिया करतार ।
किस नाल कीजे दोस्ती सब जग चल्लनहार ।

इस चीज को हम भूल जाते हैं। सब दुखों का मूल है यह, बुनियाद है यह। ''जिन्नी चल्लन जानिया सो क्यों करे विथाह ।'' यह याद रखो, प्यास लगने पर कुआं नहीं खोदा जाता। अगर पहले से ये Angle of vision (सही-नजरी) हो, उसका अनुभव हो तो दुनिया के ये उतार-चढ़ाव तो आयेंगे, उसकी Pinching (चुभन) नहीं रहेगी। छोड़ना कुछ नहीं। कांटों से दुनिया भरी है। पांव में मजबूत जूता पहनो। बस। वह क्या ? सुरतिवन्त बनो। अखरोट कच्चा है, बादाम कच्चा है। सुई मारो आर-पार हो जाएगी। अगर पक जाए तो ? क्यों साहब ? जो Rise above करके (इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर) अपने आप को जान ले, जो चलाने वाला मैं हूँ, उसका अनुभव Live करता है न कि As a matter of inference or feeling (भावना या बुद्धि-विचार पर आधारित निष्कर्ष से नहीं, अनुभव रूप में) वह दुनिया के उतार-चढ़ाव को खुश खुश झेलता है, किसी ने जाना हो तो उसे खुशी से भेजता है। हम भेजते हैं किसी को खुशी खुशी ? भूल में न रहो। बड़े प्यार से समझा रहे हैं, आगे और खोल-खोल कर समझायेंगे।

कूड़ी देख भूलो अध लहे नमूलो गोबिन्द नाम मजीठा ।

दुनिया जिसकी कीमत कौड़ी भर भी नहीं, आधी कौड़ी भी नहीं, उस पर तू भूल रहा है। यह मजीठे का रंग नहीं। एक रस नहीं रहेगा, उतर जाएगा। पक्का रंग किसमें है ? वह परमात्मा का रंग है। हम दुनिया का रंग ले रहे हैं। जो आत्मा परमात्मा का रंग ले, वह रंग भी

नहीं उतरेगा। दुनिया के नशे नींबू के रस और खट्टी चीजों से उतर जायेंगे, वह रंग चढ़ा हुआ कभी नहीं उतरेगा। वह पक्का रंग है। बात समझे ? आत्मा परिपूर्ण परमात्मा का रंग ले। ''पिता-पूत एके रंग लीने।'' कितने वह रंग ले रहे हैं ? Very few, विरले । तो कहते हैं ऐ इंसान तू भूल में जा रहा है। इस (शरीर) की क्या कीमत है ?

एक था बादशाह। उसका एक था गुरु, पीर फकीर था। उसको बड़ा मान था, मैं बड़ा राजा, मेरे नीचे इतने लश्कर, मैं इतना, मैं इतना। एक दिन उसके गुरु ने कहा, भई तेरी कोई कीमत नहीं। कहने लगा (गुरु) तु सुनना चाहता है अपने कानों से तेरी क्या कीमत है ? कहने लगा (राजा)। महाराज, आप क्या कहते हो ? मेरे इशारे पर सारा मुल्क चलता है। कहने लगे, अच्छा, कुछ समय के लिये मेरा कहना मानो। तुम बेहिस (निश्चेत) होकर पड़ जाओ । फिर मैं तुम्हें सुनाऊं तुम्हारी क्या कीमत है। वह बेहिस होकर पड़ गया। उसकी लातें गले में डाल ली। शहर में ले गये, लो भाई बादशाह की लोथ। कितने पैसे देते हो ? वह कहने लगे, पीर ने मार दिया बादशाह को। जो सुने भाग जाए। एक रुपया, आठ आने, चार आने। कौन सुने ? सब भागते चले जाएं। आखिर आने पर, दो पैसे पर, एक पैसे पर आ गये, कौड़ी पर, आधी कौड़ी पर आ गये, कौन ले ? सब भागे चले जाएं। वापस आए। ''सुना बादशाह तेरी क्या कीमत है ?'' जिस्म की क्या कीमत है ? सीप की क्या कीमत है? सीप की कीमत मोती से है और जिस्म की कीमत हमसे है। जिसने अपने आपको नहीं जाना और प्रभु का रंग नहीं लिया, वह रोता ही रहेगा। सारी दुनिया दुखों से भरी पड़ी है। जिसने उसको जान लिया। वह सुखी है। उसकी आधी कौड़ी कीमत नहीं जिस पर तू इतना नाज करता है । बाहर तो बड़ा रंग-रूप बनाता है। कौन काया अति सुन्दर है ?

काया कामण अति सुआलियो पिर वसे जिस नाले ।

आत्मा का पिर (पति) कौन ? परमात्मा ! जो उसका रंग ले रही है वह सुखी, बाकी नहीं। ''धनी विहूना पाट-पटबंर भाये सेली जाले।'' दुनिया की मिसाल भी देते हैं। कि जो स्त्री रेशमी कपड़े पहने और पति उसका न हो। फिर ? कहते हैं, आग में जला देना चाहिये। फिर कहते हैं, ''धूड़ी विच लुड़िदड़ी सोहाँ नानक तैं शौह नाले।'' जो वह (पति) साथ हो तो मिट्टी में सोना भी ठीक है। तो कहते हैं, पंजाबी में मिसाल है, बारह बरसों बाहर उजाड़ में रहना नसीब हो, पति साथ हो, तो ठीक है। तो आत्मा का पति परमात्मा है। जैसे दुनिया

में स्त्री की शोभा पति से है ऐसे ही आत्मा की उसकी शोभा है जो परिपूर्ण परमात्मा से जुड़ी रहे। होश में आओ। तुम्हारी क्या कीमत है ? इस जिस्म की तो आधी कौड़ी कीमत नहीं। ''आध घड़ी कोऊ न राखै धरते देत निकार। जब, '' काढो काढो होई।'' ले चलो भई। तो मानुष जन्म बड़े भागों से मिलता है। इसमें हमनें राज़े-जिन्दगी (जीवन रहस्य) को हल करना है। अब देखना है कि क्या कर लिया है उसको हल ? सन्त बड़े Good observer होते हैं। वह देखते हैं दुनिया क्या कर रही है ।

जीवें लाला अत गुलाला शब्द चीह्न गुर मीठा ।

कहते हैं अगर उसके महारस को पा लें - शब्द और नाम, एक ही मानों में बरता है। शब्द में महारस है। कहते हैं जो इस रंग में रंग गया वह लाल गुलाल हो जाएगा। जब आदमी को खुशी होती है, चेहरे पर टहक आ जाती है ना! जब आत्मा का रंग बना, उसकी आँखें टहक जाती हैं। वह काया अति सुन्दर है, जिसमें वह प्रगट है। नहीं तो क्या है ? बाहर के टायलेट कब तब काम करेंगे माफ करना ! रात बरता, सुबह को उतर गया, सुबह बरता, दिन को उतर गया। जो आत्मा को रंग चढ़ता है, न सुबह उतरे न शाम उतरे। बाहर के नशे थोड़ी देर के लिये नशा देंगे, फिर उतर जायेंगे। जो नाम का महारस है - ''नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात।'' यह खुमार (नशा) कब चढ़ेगा ? जब हमारी आत्मा परिपूर्ण परमात्मा का रंग लेगी। वह रंग कभी नहीं उतरता। वह ऐसा रंग है, जिस पर कोई दूसरा रंग नहीं चढ़ता। वह कहां पर है ? आगे बयान करेंगे। वह हमारा जीवनाधार है। यह किनको उपदेश है ? To all mankind (सब मनुष्य जाति को) ।

महापुरुष साखी बोलदे सांझी सकल जहाने ।

वह पढ़ा-पढ़ाया सुना-सुनाया बयान नहीं करते। वह देखकर बयान करते हैं। उसी की वह Demonstration देते हैं (साक्षात्कार करते है)। जो दे सकते हैं, उनका नाम साधु सन्त महात्मा है। वह आलम (विद्वान) है तो खुशी की बात है, वह एक चीज को सौ तरह से खोलकर समझायेगा। आलम नहीं भी, डिगरियां नहीं भी तो पते की बात कहेगा, सीधी और साफ, जैसा साईं इनायत ने बुल्हेशाह से कहा, ''साईं दा की पावणा इधरों पटना ते ओधर लावणा ।'' रामकृष्ण परमहंस के पास केशवचन्द्र सेन गये। कहने लगे, भाई एक बात से समझना हो तो मेरे पास आओ, बहुत बातों से समझना है तो विवेकानन्द के पास जाओं।

करना एक-सा काम है दोनों ने, पढ़े ने भी और अनपढ़ ने भी। पढ़ा बिना सोचे-समझे नहीं चलेगा। वह सोचता ही रहेगा। इसलिये कहा -

Bookish knowledge is all wilderness,
there is no way out.

अर्थात् किताबों के पढ़े-पढ़ाये का ज्ञान जंगल के समान है जिससे निकलने का रास्ता नहीं। एक मुसलमान फकीर ने कहा, '' ऐ खुदा जोयां खुदा गुम करदा ई।'' कि ऐ प्रभु के ढूंढने वालों तुमने प्रभु को गुम कर दिया। कहां पर ? ''गुम दरीं अमवाजे कुलज़म करदाईं।'' इस मन की लहरों में, बुद्धि की लहरों में गुम कर दिया। कितनी Clearcut (साफ और स्पष्ट) चीज है। वह जिस रंग में है, वह भी तुम्हारा इसी (जिस्म) में है। सिर्फ मुंह उधर करो, इधर से हटो। अब मैं आपको देख रहा हूं, पीछे तो नहीं देख रहा। हटू तो पीछे देखूं । देखूं तभी ना! देखने वाला बाहर फिरता है। वह कौन है ? वह हम हैं। वह क्या है ? वह चेतन-स्वरूप है, Conscious entity है, चेतन आत्मा को रंग आएगा महाचेतन प्रभु के साथ जुड़ने से। कहां जुड़ेगा ? बाहर से हटेगा तो अन्तर में जुड़ेगा। कैसे हटना है, यही बात मुश्किल है। जो आगे ही मन-इन्द्रियों के घाट का रूप बना पड़ा है इंसान-इन्द्रियों का, मन का, बुद्धि का- साधन वह करता है जिनका ताल्लुक मन-इन्द्रियों और बुद्धि के घाट से है, वह कैसे हट सकता है ? Just think for a while (ज़रा ठण्डे दिल से सोचो)। तो ये है अपराविद्या। जब तक इससे ऊपर न आओ काम नहीं बनता। न अपने-आप को जान सकोगे, न उसको (प्रभु को)। वह (प्रभु) आगे ही तुम्हारे अन्तर में है।

तो दो किस्म की भक्तियां हैं, एक वह भक्ति, जो मन, इन्द्रियों और बुद्धि के घाट से है। और दूसरी वह भक्ति जो गुरु द्वारा मिलती है। गुरु अमरदासजी साहब 70 साल तक मन, इन्द्रियों और बुद्धि के घाट के साधन करते रहे, गुरुवाणी बतलाती है। तरह-तरह के साधन किये, योगियों के पास गए, हरेक तरह के साधन किये। आखिर क्या कहा इसका नतीजा? ''बहु बिधि थाका कर्म कमाय।'' अरे भई बुद्धि का, जो ज्ञान का कोष है, उससे Rise above कैसे कर सकते हैं (ऊपर कैसे आ सकते हैं ?) सोचने वाली बात है। Inference (निष्कर्ष) निकाल कर Dips (झलकें) तो मिलती हैं, It is not living (वह जीवन का अंग नहीं बना ज्ञान, उसे जीया तो नहीं)। तो कहते हैं, ''सत्गुर मिलिया सहज सुभाय।'' उन्होंने क्या किया ? उन्होंने भक्ति दी। कौन-सी ?

गुरुमुख भक्ति करो सद प्राणी ।

कि ऐ प्राणियों! तुम हमेशा गुरमुख भक्ति करो। गुरमुख किसको कहते हैं ? ''जो गुर सेती सन्मुख हो।'' किसी समर्थ गुरु से जिसकी आँखें चार हुई हों। गुरु किसको कहते हैं ? Manifested God in man को (जिसमें वह प्रभु प्रगट है) जो इसकी (आत्म-तत्व की) Demonstration (अनुभव) दे सके। ''सन्तन मोका पूंजी सौंपी।'' बयान करना और बात है, देना और बात है। उसकी निशानी क्या है? ''अन्तर प्रगास होवे लिव लागे।'' अन्तर में प्रकाश हो जाता है। योगीजन नीचे छह चक्रों को तय करके अनहद शब्द को पकड़ते हैं, वह (सन्त) पहले दिन उसकी पूंजी दे देता है। जो दे सकता है -

साधो सो सत्गुर मोहि भावे ।
परदा दूर करे आंखन का निज दरसन दिखलावे।

गुरु लफ़्ज के मानी हैं, जो अंधेरे में प्रकाश करे। तो गुरुमुख भक्ति की तारीफ़ आपने सुनी । कुछ देना (पूंजी)। क्या ? उसके देखने की। किन आँखों से ? चमड़े की आँखों के नहीं ''नानक से अखंड़ियां बेअन्न जिनी डिसिन्डों मापिरी।'' वह आँख कब खुलती है? जब तुम सब तरफ से हटोगे इन्द्रियों का घाट छोड़ोगे, Way up होगे (पिण्ड से ऊपर आओगे)। जो बाहरी इन्द्रियों के घाट का रूप बना बैठा है इंसान आगे ही, साधन वह करता है जिनका ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से है, वह इन्द्रियों के घाट से ऊपर कैसे आ सकता है? नेक कर्म है नेक फल, बुरे कर्म का बुरा फल - Action Reaction (क्रिया-प्रतिक्रिया) का सिलसिला जारी रहता है, Dualship (द्वैत) नहीं जाती '' जब इह जाने मैं किछु करता तब लग गर्भ जून में फिरता।'' इसलिये भगवान् कृष्ण ने फरमाया, दुख और सुख दोनों ही जंजीर हैं, ख्वाह (चाहे) सोने की हो या लोहे की हो। '' स्वर्ग नर्क फिर-फिर अवतार।'' आना-जाना बना रहेगा। गुरुमुख भक्ति और दूसरी भक्ति में ये फर्क है। गुरमुख भक्ति है, जो तुम्हें कुछ (पूंजी) दे, To Start with (शुरु करने के लिये)। यह नहीं कि किये जाओ, महीने के बाद या साल के बाद या मरने के बाद मिलेगा। सन्तों का Cash का (नगद का) मामला है। थोड़ी चीज मिले तो ज्यादा की भी उम्मीद हो सकती है। वह पहले दिन थोड़ा Way up कर देते है (पिण्ड से ऊपर ले आते हैं) फिर रोज-रोज अभ्यास करने से, ''गुरमुख आवे-जाए निसंक।'' और, ''जिस मरने ते जग डरे मेरे मन आनन्द। मरने ही ते पाइये पूर्ण परमानन्द।''

अगर ये पहला कदम हो जाए, मौत का खौफ (भय) न रहे, दुनिया में रहते हुए मौत का डर न रहे। अखरोट पक गया उसे कोई फिक्र नहीं। सुख दुख आयेंगे, Pinching effect (चुभन) नहीं होगा। किसी ने जाना हो, खुशी से भेजता है, जाओ भई। कहते हैं, ''जो नर दुख में दुख नहीं माने। कंचन माटी सम कर जाने ।'' कौन करेगा ? जो अखरोट पक चुका है। देख लो। कितना कोई हठ कर लेगा माफ करना ? तो बड़ा खोल-खोल कर महापुरुष समझाते हैं। किन को ? To all mankind. ।

मिथ्या मोह मगन थी रहिया झूट संग लिपटाना ।

मोह किसको कहते हैं ? Misfit love. प्रेम जो गलत जगह लग गया उसका नाम मोह है। आत्मा का प्रेम लगना था प्रभु के साथ, लगा बैठा दुनिया से। उसका नाम मोह पड़ गया। मिथ्या मोह, यह रहने वाला नहीं, बदल जाने वाला है। आज लड़का है, कल लड़की है। आज पैदा हुआ, कल मर गया, आज बीमार हो गया, कल कुछ हो गया। घर को आग लग गई, बैंक फेल हो गया। हाय-हाय करता है। झूठा मोह है ना ! ''मिथ्या मोह झूट संग लिपटाना।'' झूट कहते हैं, फ़ना (नश्वर) को, जो एकरस न रहे। Everything is changing (हर चीज बदल रही है)। जो हम देखते हैं, जो हम सुनते हैं, जो Feel करते हैं, सब बदल रहा है। यह जिस्म भी बदल रहा है। इसके चलाने वाले को नहीं जाना। वह हम हैं। लेबल (समाजों का) कोई लगा लो। वह यही है ना कि किस स्कूल में पढ़ रहा है। और क्या है ? कहते हैं इसी में मस्त हो रहा है,मग्न हो रहा है, झूट में। ''कूड़ कूड़े नेह लग्गा विसरिया कर्तार, किस नाल कीजे दोस्ती सब जग चल्लानहार।'' देखो महापुरुष आपको किस Level पर लेजाना चाहते हैं । Think for a while (जरा ठण्डे दिल से सोचो)। हम मोह में मगन हो रहे हैं, हरेक अपनी जगह मस्त है। जी।

नानक दीन शरण कृपानिध राख लाज भगताना ।

कि हे प्रभो ! हम तेरी शरण में आए हैं। हम दीन हैं। बिरद की लाज रखो। हम तो जैसे हैं वैसे ही हैं। अपने आप इंसान क्या कर सकता है ? ''करम होए सत्गुरु मिलाए''। उसकी दया हो तो सत्स्वरूप महापुरुष मिलता है। वह क्या करता है ? ''सेवा सुरति शब्द चित्त लाए''। हमारी सुरति को, जो आत्मा ही के इज़हार (अभिव्यक्ति) का Phase (पहलू)

है, वह परिपूर्ण परमात्मा से जोड़ देता है। ये है काम। कोई कर्म काण्ड, यह वह लम्बा-चौड़ा नहीं। इसकी (बाहिरी साधनों, कर्म काण्ड आदि की) कीमत क्या है ? श्री गुरु अमरदासजी साहब कहते हैं कि जैसे बेगार में पकड़ा गया इंसान सुबह से शाम तक काम करे,सारा दिन मजदूरी करे, शाम को पैसा कोई न मिले। या जैसे छिल्के कूटते रहो,दाना कोई नहीं। छिल्के कूटना ही है ना ! सिर्फ Preparation of the ground (जमीन की तैयारी) है। मगर परमार्थ की क, ख, शुरू होती है, जब जिस्म से ऊपर आओ, उससे Rise above करो। इससे पहले नहीं। महापुरुष किस Level से बात करते हैं, हम किस Level से करते हैं ।

सुन बावरे सेव ठाकर नाथ प्राणा,
सुन बावरे आया तिस जाना ।

कितने दर्द भरे लफ़्ज हैं, सुन बावरे, वह परमात्मा जो अनाथों का नाथ है उसको तू पूज। वह तेरा जीवनाधार है। मानुष्य जीवन में तूने उसी को पाना है, पा सकता है। ऐ बावरे इंसान, जो आया सो गया। न कोई रहा, न कोई रह सकता है, न कोई रहेगा। ''राणा राव न को रहे रंक न तंग फ़कीर। वारी आपो-आपनी कोए न बांधे धीर''। दुनिया में रहता हुआ वह इंसान है। वैसे आया-गया कोई नहीं। ''सुख दुख दोवें कपड़े पहरे जाए मनुख''। तो कहते है ए बावरे इंसान! तू क्या कर रहा है ? जो आया है सो जाएगा, जो बना है सो टूटेगा। आखिर जिस्म छोड़ना है। छोड़ने वाले को जानो, वह कहाँ से आया, कहाँ जाएगा -

निहचल हब वैसी सुन परदेसी,
सन्त संग मिल रहिये ।

कहते हैं ये पक्के तौर से जान लो कि सब फ़ना (नाश) हो जाएगा, छोड़ जाना पड़ेगा। ऐ परदेसी, यह दुनिया तेरा मुकाम नहीं, न ये जिस्म तेरा है। तू परदेसी है। तेरा असल देश कहीं और है। तू चेतन स्वरूप आत्मा है। ''धाम अपने चलो जाई पराये देस क्यों रहना। काम अपना करो भाई परांये काज क्यों फंसना।'' क्यों फंसते हो ? लेना-देना तो खत्म करो, फंसो नहीं, नये बीज न डालो। कहते हैं, ''ए परदेसी जीवड़िया।''हम परदेसी हैं ना! ये हमेशा रहने का मुकान नहीं। हाँ Golden opportunity (सुनहरी मौका) है, जिसमें हम उसको पा सकते हैं। क्या पाया है इसमें। कहते हैं ये पक्के तौर पर जान लो, न कोई रहा न रहेगा। पहली बात। '' जिन्नी चल्लन जानिया सो क्यों करे विथाह। '' इसलिये क्या

करो ? किसी सन्त के संग रहो जिसने जिन्दगी के राज़ को हल किया है। सन्त किसको कहते हैं ?

हमरो भरता बड़ो विवेकी आपे सन्त कहावे ।

कहते हैं हमारा भरता, वह प्रभु बड़ा विवेकवान है। He is the God in man or man in God. (वह प्रभु में अभेद है) जिसने जिन्दगी के राज (जीवन रहस्य) को हल किया है, उसकी सोहबत करो। जो निकला है वही निकालेगा। ''मोह माया सब्बो जग सोया इह भरम कहो कित जाई।'' भरम किसको कहते हैं ? जो असल में कुछ और हो, नजर कुछ और आती हो चीज। ये माया में, भूल में जाकर कर्मों में फंस रहा है। यह भरम बन रहा है। तो उसका इलाज क्या है ?

कोई ऐसा सन्त सहज सुख दाता मोहि मारग दे बताई ।

वह कोई हो, ए हो, बी हो, सी हो, डी हो। ऐसा सन्त जो तृगुणातीत अवस्था को पा चुका हो और हमें Way up कर सके (पिण्ड से ऊपर ला सके) । जाओ ढूंढो। जिन सन्तों की, साधुओं की, महात्माओं की तारीफ़ सन्तों की वाणी में आई है, वह कुछ और हैं। आजकल बट्टा उठाओ तो गुरु मिलता है। इतने शिष्य नहीं मिलते जितने गुरु हैं, माफ करना। तो God in man (मानव घट में प्रगट परमात्मा) बड़े प्यार से कह रहा है कि ऐ बावरे इंसान ! तू क्या कर रहा है ? उसका कोई काम नहीं। वह कहता है, अपने घर चलो। बस। यही उसका काम है। Nothing more, nothing less (न इससे ज्यादा न कम) चलो, घर पहुंचो । मनुष्य जन्म हाथों से जा रहा है। कहाँ पहुँचे ? ''बहुती गई थोड़ी रही, रही सही में काम बनाओ।'' रोज चलते जा रहे हैं। आखिर हमनें भी जाना है। क्यों भई ? जाना क्या है ? जिस्म को छोड़ना है। मौत कोई हव्वा नहीं, But you have to leave the body. कहां जाना है, अगर उसका आज पता लग जाए, जाना सीख जाए तो खुशी-खुशी जाएगा। ''जिस मरने ते जग डरे मेरे मन आनंद। मरने ही ते पाइये पूर्ण परमानन्द।'' बात समझे । कितना Clear-cut angle of vision (साफ़ दृष्टि) है। कि ए बावरे इंसान ! तू क्यों भूल रहा है। जो भूल से निकला है वहीं निकलेगा ना ! जो आप नहीं निकला, आलम हो, फ़ाजिल हो, ग्रन्थाकार हो ।

जे जुग चारे आरजा होर दसूनी होय ।
नवां खण्डाँ विच जानिये नाल चले सब कोय ।

है नामुमकिन (असंभव) मगर अगर हो भी जाय -

चंगा नाम रखाय के जस कीरत जग ले ।
जे तिस नदर न आवई ताँ बात न पुच्छे कोय ।

आधी कौड़ी हमारी कीमत नहीं माफ करना । किस जोम (मान) में जा रहा है, भूल में जा रहा है। हड्डियों का पिंजरा है जिसमें पंछी बस रहा है। उड़ जाएगा। जब तक चल रहा है, चल रहा है, एक दिन चारों शाने चित्त हो जाएगा। ''आध घड़ी कोऊ न राखे घर ते देत निकार।'' जो इस Realisation (अनुभव) को पा गया वह जन्म सफ़ल कर गया, मानुष जन्म की बाजी जीत गया, बाकी सब हार गये।

हर पाइये भागी सुन वैरागी चरण प्रभु के रहिये ।

अगर बैरागी हो जाए। ये बातें सोच के चित्त हटेगा दुनिया से। फिर तुम हरि को पा सकते हो। अगर इन Attachments से (मोह से) हटो। रुड़ा पड़ा है (बहे जा रहा है) इसमें। तो कहते हैं, ऐ बैरागी, तू सुन। प्रभु को तू अंतर में बसा ले। यह चीजें, ''हब वैसी'' सब जायेंगे। न कोई रहा न रह सकता है। छूट जायेंगे। Nothing will follow you, mind that. ये लफ़्ज याद रखो। कोई तुमको नहीं रोता माफ़ करना, अपने सुखों को रोता है। ''जगत में झूठी देखी प्रीत। सबको अपने सुख को लागे क्या दारा क्या मीत।'' दो। खुशी से निभाओ। प्रभु ने जोड़ा है। नये बीज न डालो। चलो घर को। अगर ये पौड़ी हाथ से छूट गई तो या नसीब, कब मानुष जन्म तुमको मिले और तुम ये काम कर सको। ये दिल प्रभु की अमानत है। इसमें प्रभु को बिठाओ। हमनें दुनिया को बिठा लिया। अमानत में खयानत कर दी और क्या है ?

इह मन दीजे संक न कीजे गुरमुख तज बहु माना ।

कहते हैं, तुम इस चीज को पाना चाहते हो ? सिर्फ एक शर्त है। मन दे दो। निस्सन्देह दे दो। हवाले कर दो। गुरमुख बनो और सारी मान-बड़ाई छोड़ दो। यह चन्द रोज़ा है । मजीठे का रंग नहीं, कुसुंभे का रंग है। मन देने से काम बनता है। जहां मन गया वहां सब कुछ

गया - दिल गया, ईमान गया, सब कुछ। तन, धन और मन। धन देने वाले भी बहुत मिलते हैं, लाखों रुपया देने वाले, तन देने वाले भी मिलते हैं, मगर कम। मन देने वाला कहीं कहीं है। हमारे हजूर एक बार फरमाने लगे, भई मन दे दो। आज तुम जा सकते हो। एक आदमी था। कि महाराज! मैं देता हूं। कहने लगे, पहले इसे अपना तो बनाओ। अब तो तुम खिंचे फिरते हो। दे कैसे सकते हो? तो मन का बस करना जो है, ''मन बस आवी नानका जे पूरण किरपा हो।'' इसका एक ही इलाज है, ''नाओं मिले मन तृप्तिये।''

भगवान् कृष्ण के जीवन में आता है, उन्होंने यमुना में छलाँग मारी। वहां हजार मुंह वाला सांप था। बांसुरी बजाते हुए उसका नथन किया। तो नाद से (ये मन) काबू आता है। और कोई इलाज नहीं। बाहिरमुखी चीजों से थोड़ी देर के लिये काबू आता है, फिर भाग जाता है। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि, महात्मा, इस मन के हाथों रोते चले गये। हम रोज रोते हैं। मन के काबू करने का इलाज नाम है या नाम सदेह जो है, Word made flesh. उसकी सोहबत (संगति) में मन काबू आता है, ''सुरति साध संग ठहराई, तो मन थिरता बुध पाई।'' किसी अनुभवी महापुरुष के चरणों में बैठो। Radiation होगी (उससे अध्यात्म की किरणें प्रसारित होंगी) वह सुरतिवन्त है। वहां टिकाव मिलेगा। दुनिया भूल जाएगी थोड़ी देर के लिये। सारे महापुरुषों ने यह कहा है कि तन, मन, धन दे दो। अष्टावक्र ने जब राजा जनक को ज्ञान दिया है, तीनों चीजें मांगी हैं। इन्हीं में Attachment (आसक्ति) है ना! बाहर से हटे तो अपने आप की होश आए। थोड़ा हटे तो Way up हो जाए (पिण्ड से ऊपर आ जाए) जो दे सकते हैं (पूंजी) उनकी दया से। बाहर से हट भी जाए, तो अंधेरे में बैठा रहता है। कहां जाए, जब तक Way up न हो।

पुतली में तिल है तिल में भरा राज़ कुल का कुल ।
इस परदए सियाह के ज़रा पार देखना ।

जब तक Penetrate न करो (अन्धेरे को बींध कर पार न जाओ) लोग बैठे रहते हैं (अन्धेरे में)। सैकड़ों बरस बैठे रहते हैं। कहते हैं किसी मुर्शिद रसीदा (समर्थ सत्गुरु) की थोड़ी तवज्जो हो तो करे Penetrate (अंधेरे के परदे को चीर कर आगे जाए)। वह बिठाएगा, You will see for yourself (तुम देखोगे खुद) कैसे इन्द्रियां उलटती हैं। गुरु अमरदासजी साहब से पूछा गया, आप कहते हैं, इन्द्रियों को उलटो, यह कैसे हो ?

कहते हैं, ''सत्गुरु मिलिये उलटी भई भाई कहना किछु न जाए।'' बैठ कर देखो कैसे उलटती हैं, How to invert. बैठो अन्दर। कहते हैं, ''जीवत मरे तां बूझ पाए।'' Learn to die so that you may begin to live. तो बड़े प्यार से खोल-खोल कर समझाते हैं। महापुरुषों की वाणी में तह तक जाओ। Go deep down into it.

नानक दीन भगत भवतारण,
तेरे क्या गुण आख बिखाना।

कहते हैं, हे प्रभु! तेरे क्या क्या गुण बयान किए जाएं। हम दीन पुरुष हैं। तेरी दया हो तो ले सकते हैं। कैसे ले सकते हैं ? ''करम होय सत्गुरु मिलाए, सेवा सुरति सबद चित्त लाए।'' God (परमात्मा) और Manifested God in man (मानव देह में प्रगट परमात्मा) दो चीजें है। जब तक Manifested God in man अर्थात् ऐसा महापुरुष जिसमें वह प्रभु प्रकट है, नहीं मिलता, कोई रास्ता नहीं प्रभु को पाने का। सूर्य और किरण का क्या मुक़ाबिला? फिर भी तमीजी तौर पर, शुक्राने के तौर पर बयान करते हैं, ''गुरु गोबिन्द दोनों खड़े किसके लागूं पाय। बलिहारी गुरु आपने जिन सत्गुर देयो बताय।'' दोनों खड़े हैं। किस के पांव पड़े ? कहते हैं, अगर Manifested God in man (मानवघट में प्रगट परमात्मा) न मिलता तो प्रभु कहां मिलता ? इसलिये शुक्राना है। But he cannot be greater than God (मगर परमात्मा से बड़ा नहीं हो सकता)। किसी महापुरुष ने ये कभी नहीं दम मारा है। वह कहता है, वह (प्रभु) करता है।

सुन बावरे क्या कीजे कूड़ा मानो।

फिर समझाते हैं ऐ बावरे इंसान! क्यों झूठ के मोह में फंसा है। किस बात पर मान कर रहा है ? न ये रंग रहेगा, न रूप रहेगा, न रूपया रहेगा, न जायदाद रहेगी, न बच्चे रहेंगे। किस पर तू मान कर रहा है ? जिस्म की शान किस बात से है ? तेरे से। उस जीवनाधार (परमात्मा) के साथ तू इसमें क़ायम (स्थित) है, नहीं तो हड्डियों का पिंजर है। होश में आओ। Have self-respect (अपनी शान को समझो)। हम Self-respect (आत्म-सम्मान) अपने जिस्म की मानते हैं। We are conscious entities (हम चेतन स्वरूप हैं)। Be true to your own self (अपने आप के सामने तो सच्चे हो)। हम

जिस्म का रूप बने बैठें हैं, इसलिये कहते हैं, हूँ, मेरी निरादरी हो गई। बाहिरी Self-respect (आत्म-सम्मान) के क्या माने हैं ? Higher self-respect (ऊंचा आत्म-सम्मान) जो है, वह अपने आप को जानना है। कहते हैं सुन बावरे ! बार-बार कितने प्यार से कह रहे हैं, किस बात का तू मान कर रहा है ? ये रंग आखिर उतर जाएगा।

सुन बावरे क्या कीजे कूड़ा मानो ।
सुन बावरे हब वैसी गरब गुमानो ।

किस बात का गुमान कर रहा है ? सब हट जाएगा। क्या कीमत है ? ऐ भूले हुए इंसान ! जाग। ''जागो जागो सुत्तियो चल्लिया वंजारा ।'' वेद भगवान् कहता है, उठो, जागो और उस वक्त तक खड़े न हो, जब तक मन्जिल पर न पहुँच जाओ। Awake, Arise and stop not till the goal is reached.जागना क्या है ? अभी तो हम भूल में जा रहे हैं। एक Superficial life (ऊपरी जीवन) व्यतीत कर रहे हैं। We have not dipped inside, tapped inside (हमने अन्तर को नहीं खोजा)।

निहचल हम जाना मिथ्या माना,
सन्त प्रभु होए दासा ।

जाना है, जरूर जाना है, अवश्य जाना है। कितने जोर से कहते हैं ? क्यों साहब मानते हो ? न मानो तो भी जाना है। अरे किसी सन्त के चरणों में बैठो, प्रभु के दास बनो। वह तुम्हे Self-analysis के द्वारा (अर्थात् जड़ से चेतन को अलेहदा करके) Mystery of life (जीवन रहस्य) की Demonstration (साक्षात्कार) करायेगा, Way up करेगा (अर्थात् पिण्ड से ऊपर ले आएगा) और मदद करेगा, यहां भी और मरकर भी। तो इस भूल से निकलने का एक ही इलाज है, मान बड़ाईयो को छोड़ो, किसी सन्त के चरणों में जाओ। वह तुमको बतायेगा तुम्हारी कीमत क्या है ? आधी कौड़ी भी नहीं। अभी आपको मिसाल दी थी ना, उस बादशाह का आखिरी जीवन क्या रहा ? वह कहता था, ''बहाए खेश मीदानम बनीमे जौ न मे इंदम।'' कि मैं अपनी कीमत अच्छी तरह जानता हूँ, आधा जौ भी इसकी कीमत नहीं। कहता है, अगर मौला (प्रभु) करम (दया) कर दे तो इसकी कीमत लाखों की है। वह जहां कदम रख दे वह तीर्थ-स्थान है। मगर ऐसे चलते-फिरत तीर्थ की हम कद्र नहीं करते। मरकर तो वह जगह भी पूजेंगे जीतेजी कुराहिया (पथ भ्रष्ट) कहेंगे। शहर में दाखिल

नहीं होने देंगे। सूली पर लटका देंगे। ये हालत है। ये कौन लोग होते हैं ? (जुल्म करने वाले) जो भूल में जा रहे हैं । वह लोग (महापुरुष) फिर भी क्या कहते हैं ? पता है क्राइस्ट को जब सूली पर चढ़ाया गया तो क्या कहा ? लोगों ने कहा, हमारे हक में दुआ (प्रार्थना) करो। कहने लगे, Father, forgive them, for they know not what they do. (कि हे प्रभु ! इनको क्षमा कर दे, ये नहीं जानते ये क्या कर रहे हैं)।

ऐसे महापुरुषों की कद्र हमें नहीं। हज़रत इब्राहीम थे। किश्ती में जा रहे थे। वह अपने ख़याल में बैठे थे । किश्ती में एक धनाड आदमी था। नक्काल उसके साथ थे, जो नकलें कर रहे थे। ये (हज़रत इब्राहीम) चुपचाप बैठे थे। उन्होंने इनकी नकलें उतारनी शुरू कर दी। हज़रत इब्राहीम लिखते हैं कि मुझे बशारत (आकाशवाणी) हुई। खुदा ने कहा कि तेरी निरादरी मुझे मन्जूर नहीं। अगर तू कहे तो मैं बेड़ी उलट दूं , इस सब को डुबो दूं। तो कहते हैं मैंने कहा, ऐ खुदा ! इन बेचारों का क्या कसूर । इनकी आँखें नहीं खुली। अगर आपकी दया है, इनकी आँखे खोल दो। जब आँखें खुली, वही आकर माफी मांगने लगे। बात समझे? मगर ऐसा गुरु भागों में मिलता है। ''बिन भागां ऐसा सत्गुर न मिले।'' जिसके अन्दर सच्ची तड़प है उसको मिलेगा। वह खुद सामान करेगा। अंधा आँख वाले को क्या पकड़ सकता है ? आँख वाला ही दया करके हाथ पकड़ा दे तो पकड़ा दे। वह बुरा-भला भी कहता है, माफ़ करना, फिर भी वह कहता है ये बच जाएं।

निहचल हम जाना मिथ्या माना,
सन्त प्रभु होय दासा ।

तो सब ने जाना है। क्यों साहब । किसी ने नहीं जाना तो हाथ उठाओ। (एक बीबी ने जैसा कि उसने बाद में बताया, यह समझकर हाथ उठा दिया कि शायद महाराजजी पूछते हैं, जिसने जाना है हाथ उठाओं) । तुम ने नहीं जाना ? (महाराजजी खिलखिला कर हंस पड़े और साथ में संगत भी) । एक बात सच्ची है कि हमने तो आना-जाना कहीं नहीं। ''न कुछ आएगो न कुछ जाएगो राम की दुहाई।'' मगर ये वह लोग हैं जो उसको जान गए। बाकी ने तो जिस्म छोड़ना है भई। वह भी सच्चा है, हाथ उठाने वाला। पहले उस होश में तो आओ। तो कहते हैं जाना है अवश्य। इसलिये किसी सन्त के चरणों में बैठो, प्रभु के दास बनो । वह अपना दास नहीं, प्रभु का दास तुम्हें बनाता हैं । जी ।

जीवत मरिये भौजल तरिये जे थीवे कर्म लिख्यासा ।

अगर मालिक की ख़ास दया, धुर कृपा होगी तो कोई जीते-जी मरने की Demonstration (अनुभव) देगा। बस। Learn to die so that you may begin to live. जीते-जी मरना सीखो। ''नानक जीवन्देयां मर रहिये ऐसा योग कमाइये।'' मरते वक्त क्या होता है, आपको पता है ? मरने वाला दूसरों को पहचानता नहीं, नीचा हिस्सा बेहिस (निश्चेत) होता है, कण्ठ बजता है, आँखें फिर जाती हैं। ये मरकर होता है। जीते-जी यहां आओ। मरकर तो सारा जहान आता है। जो जीते-जी आएगा, वह आँख खुल जाएगी, देखने वाला बन जाएगा, मौत का भय जाता रहेगा। अब जीते-जी कैसे मरें, इसकी वह (अनुभवी पुरुष) Demonstration देगा। दुनिया मरने से डरती है लेकिन हैरानी की बात है उसके चरणों में लोग आते हैं, महाराज मारो। ''मरने को आ रही है दुनिया तेरी गली में।'' ये है बात जो हमने जिन्दगी में सीखनी है, किसी समाज में रहो। जो ये कर ले वह हंसता हंसता जाएगा, नहीं तो रोता घिड़कता जाएगा। इस मानुष जीवन में ये काम नहीं किया तो You go round (चक्कर काटोगे आवागमन का) । ''पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे एहला जन्म गंवाया।'' कितने प्यार भरे लफ़्ज़ों में और मजबूती से कह रहे हैं, फिर भी हम न समझें तो क्या है। पता है यह बाणी उच्चारण करने वाले का क्या हशर हुआ ? तत्ते तवों पर बिठाया गया ।

एक मन्दिर, एक मस्जिद, एक गिरजा, अगर उसकी दीवार गिर जाए तो सैकड़ों प्रभु के बनाये हरिमन्दिरों (इंसानी जिस्मों) को हम कुर्बान कर देते हैं। परमात्मा किस मन्दिर में रहता है ? जो उसने बनाया है। God does not reside in temples made of stones (अर्थात् परमात्मा इंसानी हाथों के बने ईंट-पत्थर के मन्दिरों में नहीं रहता) मैं इंगलैंण्ड में गया। वहां एक टाक देते हुए मैंने ये बात कहीं। सारे महापुरुषों ने ये कहा है। वह प्रभु कहां रहता है ? गुरुवाणी में आता है, जिसको उसने बनाया है, उसमें वह रहता है। ये जिस्म किसने बनाया है ? माता के गर्भ में कौन आँख बनाता है,नाक बनाता है ? सो मैंने जब ये बात कही जो क्राईस्ट ने कही थी कि, God does not reside in temples made of stones, तो एक बिशप उठकर कहने लगा, You have thrown an atom bomb on all our churchianity (कि हमारे चर्चों पर आपने एटमबम गिरा दिया है) ।

मैंने उनसे कहा कि यह मानव शरीर जो है, It is the true temple, true church in which God resides. Models were made outside - dome shaped, nose shaped, forehead shaped. We put in symbol of light and sound. We worship those places which are models of this true temple of God. You tap inside, recede within and you can see the Light and hear the Sound, that ringing light of God. (अर्थात् सच्चा हरि मन्दिर ये शरीर है। इसी के नमूने पर बाहर मन्दिर, मस्जिद, गिरजे गुरुद्वारे बनाये गये, गुम्बददार शकल के, नाक की लम्बूतरी शकल के या माथे की महराब की शकल के। इनमें हमने चिह्न रखे, ज्योति और ध्वनित के। हम इन मन्दिरों को पूजने लग गये जो इस मानव शरीर के सच्चे हरि मन्दिर के नमूने हैं। अगर हम मानव घट में प्रवेश करें तो प्रभु की ज्योति और ध्वनि का अनुभव प्राप्त कर सकते हैं)।

बाहर का मन्दिर गिराया जाए तो हजारों हरि मन्दिर (ये इंसानी जिस्म) हम कुर्बान कर देते हैं। ये कहां की अक़लमन्दी है ? होश में आओ। फकीरों ने कहा, ''मस्जिदे कोरां जे आबो-गिल बवद।'' अर्थात् जिनकी आँखें नहीं खुलीं उनके लिये मिट्टी-पानी के ये मन्दिर हैं। ''मस्जिदे साहब दिलाँरा दिल बवद।'' जो साहिब दिल हैं, जिनकी आँखें खुली हैं, उनके लिए ये जिस्म हरिमन्दिर है । Body is the temple of God. Whose eyes are not opened they take these outer models as the temple of God. That is really the model made after manbody, the true temple which was made by God in the womb of mother. Who was there to make it ? Was there any machinery to make the eyes and nose and everything ? It was God who made it.

इसलिए महापुरुष कहते हैं जीते जी मरो, छोड़ो इसको, बाहर से हटो, At will rise above करो। अगर जीते जी मरना सीख जाओ तो मरने का भय न रहे। O death where is thy sting ? (ऐ मौत तेरी चुभन कहां है ?) ये वह कह सकते हैं जो Rise above करें । वह हंसते-हंसते जायेंगे और मानुष जन्म ही में उसको पा सकते हैं। जिसने ये काम कर लिया उसका बेड़ा पार है। ये जिन्दा मिसालें हैं। हमारे हजूर फरमाते हैं अगर तुमने वाकई (सचमुच) परमार्थ को समझना है, जाओ किसी सत्संगी के पास, उसकी मौत के वक्त- सत्संगी वह जो अभ्यास करता है, नाम लेकर रख छोड़े, वह नहीं। संभाल तो उसकी भी होती है- वह हंसता हुआ जाता है।

स्वामी दयानन्द थे। वह महापुरुषों के पास पहुँचे आखिर उम्र में। जब उनका अन्त समय आया तो पण्डित गुरुदत्त उनके पास थे। स्वामी दयानन्द सारी उम्र उनको यकीन नहीं दिला सके। मगर मौत के वक्त गुरुदत्त ने उनको देखा तो वह हंसते हंसते जा रहे थे। खुश थे। He was convinced. (गुरुदत्त को यकीन आ गया कि कोई पावर है)। संभाल देखनी हो अनुभवी पुरुष की तो किसी मरते हुए को जाकर देखो। दुनिया रोती है, वह हंसता हुआ जाता है। वह देखता है (गुरु) बाहर भी साथ है, अन्तर भी साथ है। वह तुमको जीतेजी मरने की Demonstration (अनुभव) देता है। ''मरिये तो मर जाइये फूट पड़े संसार। नानक ऐसी मरनी को मरे दिन से सौ-सौ बार।'' जो ऐसा करले उसको मौत का क्या भय होगा। यहां से क, ख शुरू होती है (परमार्थ की) It is not the end-all (यह आखरी मन्जिल नहीं)।

गुर सेवीजे अमृत पीजे जिस लावे सहज ध्यानो।

कहते हैं, जिसको मालिक दया करे, उसको सहज में ध्यान लग जाता है । He lives in the world yet is out of it. उसकी बेड़ी पानी में है, पानी बेड़ी में नहीं। वह पका हुआ अखरोट है माफ करना। उसको बाहरी चीजें असर नहीं करती। ये है निशानी। दोनों हाथ लड्डू। ये चीज कहाँ से मिलती हैं ? कहते हैं सन्त जनों से।

सन्त जनां मिल भाइयों सच्चा नाम संभाल ।
तोशा बांधो जिया का एथे ओथे नाल ।

दोनों जहानों का तोशा है। दोनों हाथ लड्डू । किस कीमत पर मिलता है ? कोई पैसा-धेला खर्च नहीं करना पड़ता । It is all free. क्यों भई ? कोई टेक्स लगता है ? कुदरत की दातों की तरह ये भी मुफ़्त है । All things in nature are free and they are given free. गुरु को मिलना काफी नहीं। सेवने की जरूरत है। मिल भी जाता है। दवाई ली, खाई नहीं, जाले में रख दी। बीमारी कैसे जाए ? When you meet a Master do as he advises you. He will give you something some maybe little of demonstration. Then develop it further. Live according to his instructions. क्राइस्ट ने इसीलिये कहा, If you love me keep my commandments (अगर तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मेरा कहना मानो)। सेवनेवाला बने। मिलने वाले तो बहुत मिलते हैं, सेवने वाला कहां मिलता है ? सेवने से क्या होगा ? वह महारस को, अमृत को पा

जाएगा। ''अमृत एको नाओं है।'' वह हमेशा की जिन्दगी देने वाली चीज है आत्मा को। जो आत्मा उसके साथ लग गई हमेशा की जिन्दगी को पा गई। जो दुनिया के साथ लग गई उसकी Consciousness (चेतनता) कम होती है। ''मानुख देह पाई वड़भागी नाम न जपे सो आतमघाती।'' वह आत्मा का घात कर रहा है। उसकी चेतनता दिनों दिन कम हो रही है। नीची योनियों में जाएगा।

नानक शरण पया हरद्वारे हौं बलबल सद कुरबानो ।

हे प्रभु ! तेरी शरण हम आए हैं। हम बार-बार कुरबान जाते हैं ।

सुन बावरे मत जाने प्रभ मैं पाया ।

फिर आखिर कहते हैं कि अगर तुझे कुछ मिला है तो उसकी बरकत से मिला है। ऐ पागल इंसान, तू समझता है तूने पाया है ? वह दे दे, न दे, न दे । कौन दम मार करता है ? जो अनुभवी पुरुष है वह कभी नहीं कहता, मैं करता हूँ। कह नहीं सकता। वह देखता है वह ताकत कर रही है। किसी अनुभवी पुरुष से कभी यह नहीं सुनोगे कि मैं करता हूं। प्रभु को पाने के लिए, First humility. पहले नम्रता हो तभी कोई किसी के पास जाएगा। फिर जाकर भी पूरी बात सुने। जो परखता फिरे ? जो प्याला सुराही के नीचे है, वही भरा जाएगा ना ? और पाकर भी, फलदार दरख्त की शाख फल से लद जाए, एह झुक कर जमीन के साथ लग जाती है। वह कब कहता है,मैं करता हूं ? वह देखता है, वह परमात्मा कर रहा है। मेरी कीमत क्या है ? ''अगर मौला करम करदन'' अगर वह प्रभु कृपा करे तो लाखों की है, नहीं तो आधी कौड़ी कीमत नहीं। ये उसकी कृपा है।

एक बादशाह था। उसका एक वज़ीर था, घसियारा, वज़ीरे-आज़म (प्रधानमन्त्री) था वह। बादशाह उसकी बड़ी कद्र करता था। साथ के मिनिस्टर शिकायत करने लगे, देखो एक घसियारे को तुमने वज़ीर आज़म बनाया है। कहने लगा (बादशाह) वह बड़ा अकलमन्द है। वह कहने लगे, मैं बताऊं उसकी हैसियत क्या है ? वह, जब टिफिन टाईम होता था, एक कमरा था, उसमें जाकर मिनिस्टर का लिबास उतार देता था,लांगड़ बांध लेता था, आगे खुरपा रख लेना और कहना, हे भगवान, मेरी यह औकात है। ये सब तेरी बख़शिश है। अनुभवी पुरुष कभी इस बात को नहीं भूलता, As a son of man. वह एक साधारण इंसान की तरह व्यवहार करता है। थोड़ा जो अहंकार भर जाए वही ले डूबता है। नम्रता सन्तों का सच्चा सिंगार है। ऊपर से हम कहे जाएं, हम निर्मल हैं, हम निर्मल हैं, दिल में

कहता है, मेरे जैसा कौन है ? कोई दम नहीं मार सकता यहां। आपको पता है, तत्तें तवों पर जब बैठे थे गुरु अर्जुन, हजरत मियां मीर आए। कहते हैं, मुझे इजाज़त दो, मैं दिल्ली और लाहौर की ईंट से ईंट खड़का दूं । कहां से मिली है भई ? कहते हैं, ''तेराभाणा मीठा लागे।'' उसकी गरदन पर छुरी रख दो तो भी लोगों का बुरा नहीं मांगेगा।

सुन बावरे थीयो खेह जिन प्रभ ध्याइया ।

कहते हैं एक बात कर लो। जिन्होंने प्रभु को ध्याया है उनके चरणों की खाक बन जाओ। ''जिन्नी नाम ध्याइया गये मुसककत घाल, नानक से मुख उझले केती छुट्टी नाल।'' नाम का ध्याना यह है, परिपूर्ण परमात्मा से आत्मा का हर तरफ़ से हट-हटाकर उसके साथ लय होना, जुड़ना। योग किस को कहते हैं ? युज धातु से निकला है, जुड़ने का नाम है। जो जुड़ा है, ''कोई जन हरि स्यों देवे जोड़।'' वह तुमको भी जोड़ देगा। उसके चरणों की खाक बन जाओ।

जिन प्रभ ध्याया तिन सुख पाया बड़ भागी दरसन पाइये ।

ऐसे पुरुषों के बड़े भागों से दर्शन होते हैं । ''उठ फ़रीदा गबन कर दुनिया भालन जाए, मत कोई बखशिया तुध मिले तू भी बखशिया जाए।'' Where are men ? इंसान कहां हैं ? इंसान खाली इंसान बन जाए तो, ''पाछे पाछे हरि फिरे कहत कबीर कबीर।'' हम तो हैवान (पशु) हैं, शकल इंसानी है, सीरत हैवानी है, Animal spirit है । जब तक इन चीजों से ऊपर न आऐं हम इंसान कहलाने के हकदार नहीं ।

थियो निमाणा सद कुरबाना सगला आप मिटाइये ।

आपाभाव न रहे। ''हे प्रभु तेरी कृपा है।'' मन देना बड़ा मुश्किल है। सब कुछ दे सकता है। मन का देना मुश्किल है। गुरु रामदास ने दिया मन, मन की रड़न न रही। गुरु अमरदासजी ने चबूतरे बनवाये। सारी संगत लग गई। कई बार बनवाये-तुड़वाए। फिर कहा ये जगह अच्छी नहीं और जगह बनाओ। वहां कई बार बनवाये-तुड़वाये। फिर कहा, ये जगह भी ठीक नहीं। फिर कहा, ये मिट्टी अच्छी नहीं। फिर कई बार बनवाए-तुड़वाए। रहते रहते सब छोड़ गये। एक जेठाजी रह गये। कहते हैं सत्तर बार बनवाए, सत्तर बार तुड़वाए। आखिर लोगों ने कहा जेठाजी से, गुरु अमरदासजी बूढ़े हो गये हैं। क्या तुक है इसमें, बनाओ-तोड़ो। छोड़ दो। रो पड़े। कहने लगे, गुरु ही एक जागता देव है। मुझे सारी उम्र हुक्म करे,

बनाता-तोड़ता रहूँगा। वह भी देखते थे, वह कौन सा हृदय है जिसमें मन नहीं है, ताकि वह दौलत (अध्यात्म की) उसमें डाल सकूं। बड़े Careful (सर्तक) होते हैं ये महापुरुष। तरह-तरह की उनकी कसौटी होती है देखने की। ऐसे-वैसे को चीज यह देते नहीं। ये उसकी बखशिश है। परखते रहते हैं, हरेक महापुरुष का अपना तरीका है परखने का। जब तक मैं-पना है, वह नहीं है। जब तक L है ना, मै-पना है World है, जब L निकल जाए Word (शब्द) है, परिपूर्ण परमात्मा है। ये, जिन्होंने पाया उनके लिये हिदायत है ।

ओह धन भाग सुधा जिन प्रभ लध्धा,
हम तिसपर आप वेचाया ।

जिसने मानुष जन्म पाकर उसको पा लिया, कहते हैं हम बय-खरीद हैं उसपर। यहां तक कहते हैं, जिस्म के टुकड़े करके उसपर वार दें, फूल-पताशों की तरह। एक एक महापुरुष आता है, रूहानियत (अध्यात्म) का सैलाब आ जाता है, हजारों को रंग दे जाता है, लाखों को रंग दे जाता है। और वह कब आते हैं ? जैसे बादल आते हैं , ''मेघे को फ़रमान है बरसो किरपाधार।'' बारिश होती है, चल-थल एक हो जाते हैं। ऐसे ही रूहानी पुरुष जब आते हैं, सब जल-थल एक हो जाते हैं ।

नानक दीन शरण सुख सागर राखौ लाज अपनाया ।

ऐ दया के समुद्र हम आपकी शरण में पड़े हैं । हम आपके बच्चे हैं। दया करो। We are at thy feet. Extend all your grace and protection to us. यह थी गुरु अर्जुन साहब की वाणी। ये दुनिया का रोना बयान किया, हमारी हैसियत बयान की। ये है हमारा आदर्श। कहां से मिलता है ? जिन्होंने पाया है उनकी संगति करो। वह जीते-जी आपको Demonstration (अनुभव) देंगे। पहले दाखिल होते ही एम. ए. नहीं हो जाता। उसकी क, ख, शुरु होती है जब जिस्म से ऊपर आओ - A. B. C. starts when you rise above body-consciousness हरेक पिता चाहता है मेरा बच्चा मेरे जैसा बल्कि मेरे से अच्छा हो। Every king wants his son to be a king, not a minister mind you. हरेक सन्त चाहता है उसके पास आने वाले सभी सन्त बनें। कितनी खूबसूरती है, हमारा ही रोना है । समझे हो तो अमल करो। तुम्हारा अपना काम है। मानुष जन्म में ये काम करना है, जिसका बहुत सा हिस्सा गुजर चुका है। इस भूल से निकलो। जो निकला है वही तुम्हे निकालेगा। उसकी हिदायत के मुताबिक काम करो । ❑

हमारे प्रश्नों के उत्तर

(हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज की पुस्तक SPIRITUAL ELIXIR में से)

प्रश्न 1 : किस हद तक इंसान का बाहरी बर्ताव उसके आंतरिक आध्यात्मिक विकास को दर्शाता है ?

उत्तर : त्याग और स्वयं को तुच्छ समझने की तीव्र भावना, इंसान के आध्यात्मिक विकास की बाहरी अभिव्यक्ति है । ऐसा हम अपनी कमियों को छुपाने के लिए नहीं करते, बल्कि इसलिए करते हैं, ताकि हम अपने दिल की गहराइयों में यह महसूस करें कि हम प्रभु की इस विशाल सृष्टि में एक बहुत ही तुच्छ प्राणी हैं। जो दैवी योजना में चेतन सहकार्यकर्ता बन जाता है, वह कभी भी दावा नहीं करता, बल्कि नम्रता पूर्वक Third person में वर्णन करता है, यानि अपने आप को कोई श्रेय नहीं देता है । वह कभी किसी का अपमान नहीं करता, बल्कि दूसरों की सहायता करने में सदा आनंद महसूस करता है। वह आलोचना नहीं करता, बल्कि हमारे आध्यात्मिक उत्थान के लिए, निष्काम भाव से, जीवन की सच्चाइयों का वर्णन करता है। वह पवित्र नियमों का सच्चाई से पालन करता है, चाहे उनके नतीजे कुछ भी हों। वह वातावरण के सामने घुटने नहीं टेकता है, वरन् स्वयं को खुशी-खुशी उसके अनुसार ढाल लेता है, यह भली-भाँति जानते हुए कि वह सदा गुरु-सत्ता की छत्रछाया में है। वह कभी निराश नहीं होता और विपत्तियों के बावजूद भी, दिल की गहराइयों में हमेशा प्रसन्न रहता है । वह दूसरों को, उनकी कमियों के लिए दोषी नहीं ठहराता है, बल्कि एक सतर्क जिंदगी जीकर, उन्हें उखाड़ फेंकने की कोशिश करता है। अपनी रूहानी तरक्की का श्रेय वह अपनी स्वयं की सच्ची कोशिशों को नहीं देता है, बल्कि इसे सत्गुरु की पवित्र भेंट मानता है। वह सफलता और असफलता, दोनों में संतुलित रहता है। वह आसानी से माफ कर देता है और उसे भूल जाता है। वह विरले ही उत्तेजित होता है और दूसरों के आध्यात्मिक कल्याण हेतु अपना सहयोग देने की तीव्र भावना रखता है।

वह अपना अधिकार नहीं जताता है, ना ही कम उन्नत इंसानों से किसी प्रकार भी श्रेष्ठ होने का दावा करता है, बल्कि एक दोस्त या भाई की तरह व्यवहार करता है और उनकी मुक्ति के लिए मन ही मन प्रार्थना करता है। वह दूसरों की चिंताओं से कभी बोझिल महसूस नहीं करता और बहुत आसानी से उनका उत्तम समाधान बता सकता है। वह दिल से सदा दयालु होता है और सभी इंसानों, जानवरों, पक्षिओं और कीड़े-मकोड़ों का भला चाहता है।

वह सदा तीव्र कृतज्ञता से भरा होता है और यदा-कदा ही अपनी कठिनाइयों के लिए शिकायत करता है। वह पाक-पवित्र होता है, दयालु होता है, पर अपने सद्गुणों को आध्यात्मिक विज्ञान की ओट में छिपा कर रखता है। वह अपनी बहादुरी या बुद्धिमता पर घमंड नहीं करता, बल्कि गुप्त रूप से दूसरों की सहायता करने की कोशिश करता है। वह दिखावा नहीं चाहता और अपने बर्ताव में सदा सहज और विनम्र रहता है।

वह स्वेच्छा से अंतर में पवित्र नाम से जुड़कर और अपने ध्यान को सत्गुरु के पवित्र चरणों में लगाकर, मन के विचारों को शांत कर सकता है। वह सदा सत्गुरु के संरक्षण में रहता है और हर घंटे, नहीं, बल्कि हर क्षण गुरु-सत्ता से जिंदगी का उभार पाता है। वह भली-भाँति जानता है कि भौतिक जिंदगी एक क्षणिक अवस्था है, आत्मा की निम्न योनियों से लेकर मानव चोले तक की लंबी यात्रा की और परलोक में कोई भौतिक पदार्थ उसके साथ नहीं जाएँगे। वह जमाखोरी में विश्वास नहीं करता, बल्कि एक सादा संतोषप्रद जीवन व्यतीत करने की कोशिश करता है। वह ऐश-ओ-आराम के रहन-सहन से आकर्षित नहीं होता है और इसे इंसानी आत्मा पर एक मजबूत बेड़ी मानता है। वह तथाकथित धनवान और समृद्ध लोगों से ईर्ष्या नहीं करता, बल्कि मन ही मन जीवन-मृत्यु के चक्र से उनकी मुक्ति के लिए प्रार्थना करता है। वह खाने के लिए नहीं जीता, बल्कि परमानंद और शांति से भरपूर जिंदगी जीने के लिए खाता है। वह चटकीले-भड़कीले वस्त्रों का शौकीन नहीं होता, बल्कि साधारण कीमत वाले सादे वस्त्रों से संतुष्ट रहता है।

वह परिश्रम से दूर नहीं भागता, वरन् दूसरों की भलाई के लिए, अपनी शारीरिक क्षमता की परवाह किये बिना, निष्काम भाव से बड़े-बड़े काम हाथों में ले लेता है। वह अपनी मेहनत के बदले कोई इनाम नहीं चाहता, बल्कि पवित्र समर्पण को अपने आप में एक वरदान मानता है। वह खुद तकलीफें उठाकर भी दूसरों की सहायता करना चाहेगा। थोड़े लफ़्ज़ों में, वह एक नेक विचार, नेक बोली और नेक कर्मों वाला विवेकपूर्ण इंसान है ।

प्रश्न 2 : क्या अनुशासित नामलेवा वह है, जो सत्संगों में नियम से जाता है, शाकाहारी बना रहता है और आत्म निरीक्षण करता हुआ आध्यात्मिक अभ्यासों में समय देता है ?

उत्तर : हाँ, ये एक अनुशासित नामलेवा की खास-खास निशानियाँ है, जिन्हें विनम्र होकर जीवन में धारण करना चाहिए ।

प्रश्न 3 : क्या एक सत्संगी होने की हैसियत से हमारी कोई खास जिम्मेवारियाँ होती हैं ?

उत्तर : हाँ, एक नामलेवा की हैसियत से, हमारा एक फर्ज है और फर्ज के साथ-साथ जिम्मेवारी भी आ जाती है ।

रूहानी सत्संग का एक सदस्य अपने ऊपर संसार की सबसे कठिन और सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेवारी ले लेता है और वह है स्वयं को और अपने साथियों को अपने आप को जानने और प्रभु को पाने के लायक बनाना। अतः हमारा लक्ष्य है, परा विद्या या परलोक का ज्ञान।

''आत्मा के विज्ञान'' का ध्येय है, इंसान की आत्मा को स्थूल, सूक्षम और कारण मंडलों से पार ले जाकर प्रभु में अभेद कर देना। इसलिए यह एक बिलकुल स्वतंत्र विज्ञान है। बाहरी कर्मकांड,रस्म-रिवाज, यज्ञ, व्रत, जागरण या यात्राएँ, ये सब बाहरी कामकाज ''अपरा विद्या'' कहलाते हैं। अपने सत्संगों में, हम किसी भी और किस्म की गति-विधि को, जो इस विज्ञान से संबंधित नहीं हो, कोई स्थान न दें। हमारी जिंदगी का मुख्य लक्ष्य है, अपने आप को जानना और प्रभु को पाना। हम इस से कभी भी विचलित न हों और अपने हर कार्य को करते हुए, हम सोचें कि क्या वह हमें हमारे लक्ष्य के पास ले जाता है, या कि दूर और हमारी जिम्मेवारी है कि हम सभी के सामने एक अच्छा उदाहरण पेश करें।

प्रश्न 4 : अगर संभव हो तो क्या मैं ऐसे लोगों से दूर रहूँ, जो अपने सांसारिक तौर-तरीकों और नकारात्मक प्रभाव की वजह से, मुझे नुकसान पहुँचाते हों, खासकर अगर यह संगत लंबे समय के लिए हो ?

उत्तर : इंसान अपनी संगति से जाना जाता है। संगति से ही हमारा चरित्र ढलता है और इस संदर्भ में आध्यात्मिक जिज्ञासु को बहुत सतर्क रहने की आवश्यकता है। सांसारिक प्रवृत्ति वाले लोग आमतौर से भौतिक और इंद्रिय सुखों में लिप्त रहते हैं और उनके तौर-तरीके आध्यात्मिक जिज्ञासु पर बुरा असर डालते हैं। आपको पता होना चाहिए कि आपका रास्ता परलोक को जाने वाला है, जबकि सांसारिक लोगों का उद्देश्य होता है इंद्रिय सुखों को पाना। अपने रूहानी तरक्की के बड़े उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, आपको सावधानी से अप्रिय संगति से दूर रहना चाहिए। अश्लील साहित्य का पढ़ना भी नुकसान देह होता है और सतर्क रहकर, इससे दूर रहना चाहिए।

प्रश्न 5 : क्या हमें उस सत्संगी की सहायता के लिए अपने सारे कामकाज छोड़ देने चाहिएँ, जो अकस्मात् ही आ जाते हैं (जैसे आसमान से टपक पड़े हों), अपना बोरिया-बिस्तर उठाकर, पैसे से कंगाल और आपके सारे पारिवारिक कामकाज अस्त-व्यस्त

करते हुए और यह उम्मीद रखते हुए कि आप खुले दिल से उनका स्वागत करेंगे और उनको रहने की जगह देंगे ?

उत्तर : नामलेवाओं का आपसी संबंध सच्चा होता है, जो कभी नहीं टूटता और वे सत्गुरु के परिवार के सदस्य होते है। वे प्रभु के नाम में सच्चे भाई-बहन हैं। नामलेवा उनकी हर प्रकार से सहायता करे, पैसे से और अन्य प्रकार से भी, पर साथ ही साथ अपने परिवारों की उपेक्षा न करें। वे कोशिश करें कि वे अपने गुजारे के लिए अपने पैरों पर खड़े हों। उनका अपनापन उन सभी तक फैलना चाहिए,जो कि इस रास्ते पर हैं ।

प्रश्न 6 : अब जबकि इंसानियत बहुत सी सामाजिक कठिनाइयों का सामना कर रही है, तो क्या हम दिन के समय में उच्चतर शिक्षा और अनुसंधान के द्वारा इन समस्याओं को समझनेकी कोशिश करें और देर शाम का समय भजन-सिमरन में लगाएँ, या फिर हम इन मुसीबतों की ओर से अपना मुँह मोड़ लें और सिर्फ प्रभु की खोज से अपना वास्ता रखें ?

उत्तर : अनुशासित नामलेवाओं को कोशिश करनी चाहिए कि वे रोजमर्रा की जिंदगी में अपने सांसरिक उत्तरदायित्वों को अच्छे से अच्छा निभाएँ, लेकिन ऐसा वे वैराग्य भाव से करें, सिर्फ प्रभु को जानने के लक्ष्य को ही बहुत महत्वपूर्ण समझना चाहिए। अन्य सभी कामकाजों को अगर जरूरी हों तो, गंभीरता से करना चाहिए,ताकि आप अंदर से संतुष्ट रहें कि आपने अपना फर्ज भली-भाँति निभाया ।

प्रश्न 7 : अगर हम किसी रचनात्मक कार्य, जैसे चित्रकला में जुटे हों, तो क्या हम सत्गुरु से सहायता और प्रेरणा के लिए प्रार्थना कर सकते हैं ?

उत्तर : एक बालक शिष्य अपने सभी कार्यों की पूर्ति के लिए सदा प्रार्थनाबद्ध रहता है। ऐसा करने में कोई हर्ज नहीं,बशर्ते ऐसा वैराग्य भाव से और अपने वैध फर्जों को अदा करने के लिए किया जाए। ज्यादा स्पष्टीकरण के लिए आप पुस्तक ''प्रार्थना, क्यों और कैसे करें'' देख सकते हैं ।

प्रश्न 8 : क्या कलात्मक प्रतिभा, जैसा कि कुछ लोग कहते हैं, वर्तमान जिंदगी में प्रयोग के लिए दी गई प्रभु की भेंट होती है या यह ऐसी वस्तु है, जिसे कलाकार ने अपने पिछले जन्मों में विकसित किया होता है और अब रूहानी रास्ते पर कदम रखने के लिए, इसे कम महत्व दिया जाना चाहिए ?

उत्तर : पुराने कर्मों के फलस्वरूप मिली सभी योग्यताएँ शुभ हैं, बशर्ते उनका प्रयोग नियमित भजन-अभ्यास द्वारा आध्यात्मिक विकास के लिए किया जाए। हर कोई इस संसार में निश्चित प्रवृत्तियों या Impulses के साथ आता है, जिन्हें समर्थ मार्गदर्शन के तहत, आध्यात्मिक विकास के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है। नामलेवा को एकाग्र मन से भक्ति का विकास करना चाहिए और इसे (भक्ति को) प्रभु की सभी भेंटों में से सर्वोत्तम मानना चाहिए ।

प्रश्न 9 : क्या रचनात्मक व्यवसाय जैसे चित्रकला, जिनसे कुछ खुशी और संतोष प्राप्त होता है और कुछ फालतू कमाई भी हो सकती है, जारी रखने लायक है या वे रूहानी विकास में बाधा बन सकते हैं, अगर वे किसी का पेशा हों ?

उत्तर : तथाकथित रचनात्मक व्यवसाय जैसे चित्रकला, गायकी, कहानी लिखना आदि सिर्फ फालतू के धंधों में मन को लगाना है, खासकर जब ये कार्य आपके वैध फर्जों के दायरे में नहीं आते या आपकी आजीविका कमाने के लिए जरूरी नहीं होते। बल्कि इस प्रकार के कार्य हमारे सूक्षम अहंकार को अंधाधुँध लेकिन चोरी-चोरी बढ़ाते जाते हैं और इसलिए इनको बहुत सावधानी से करना चाहिए । नामलेवा को ध्यानाभ्यास में अधिक समय देने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि वह इस रास्ते पर तरक्की कर सके ।

प्रश्न 10 : धर्मग्रन्थ के अनुसार ईसामसीह ने पीटर को प्रभु के साम्राज्य की 'चाबियाँ' दी। कुछ अध्यापक कहते हैं कि ये चाबियाँ हैं प्रेम, विवेक, समझ, दयाभाव और सहानुभूति। क्या यह संभव नहीं कि पाँच सिद्ध नाम असली 'चाबियाँ' हो ? यदि ऐसा है, तो क्या आप Divine Pearls के लिए हमें कुछ देंगे ?

उत्तर : ये सभी रूहानी निपुणता को पाने के तरीके हैं। नाम के साथ पवित्र गठबंधन के विभिन्न पक्ष, शिष्य को दी गई प्रभु के साम्राज्य की चाबियाँ हैं, जिनसे उसकी आत्म-चेतनता, ब्रह्मांडीय चेतनता और पराब्रह्मांडीय चेतनता जागृत होती है। ये सभी दिव्य सद्गुण ज्योति और श्रुति के साथ जुड़ने से बिन माँगे, अपने आप आ जाते हैं । रूहानियत का सूरज जब ऊँचाई पर चमकता है तो हर वस्तु को साफ-साफ दिखलाता है। इसका स्वाभाविक नतीजा है, विवेक का मिलना। जब धर्म स्थापित हो जाता है, तो अगर-मगर के लिए कोई जगह नहीं छोड़ता। आपको जोर लगाने की या नाटकबाजी करने की कोई जरूरत नहीं, बल्कि स्वाभाविक तौर से जीना है । ❑